BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 2, April-June, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

समाजीकरण की प्रक्रिया में जनसंचार माध्यम की भूमिका एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

डॉ. अनुजा अमेरी
पीएचडी यू जी सी नेट

भूमिका:

समाजीकरण किसी भी व्यक्ति के जीवन का एक अनिवार्य प्रक्रिया है.समाजीकरण के जरिए ही व्यक्ति समाज के रीति - रिवाजों,आदर्श मूल्यों और व्यवहार करने के तौर- तरीकों को सीखता और समझता है. समाजीकरण ही व्यक्ति को समाज में न सिर्फ सामंजस्य करना सिखाता है बल्कि यह किसी व्यक्ति के जीवन को आसान तरीके से जीने लायक भी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है.समाज के सदस्य होने के नाते प्रत्येक व्यक्ति से यह अपेक्षा रखी जाती है कि वह समाज द्वारा निर्मित आदर्श मूल्यों का पालन करें.इसके पीछे महत्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि व्यक्ति को इसी समाज में रहना है और उसके द्वारा अपनाए जाने वाले व्यवहार से सामाजिक व्यवस्था पर भी प्रभाव पड़ता है.व्यक्ति के सकारात्मक व्यवहार जहां एक ओर सामाजिक व्यवस्था को स्थिर बनाने में भूमिका निभाती है, वहीं दूसरी ओर व्यक्ति के नकारात्मक व्यवहार से समाज में अस्थिरता पनपती है.समाज के प्रति अनुकूल या प्रतिकूल व्यवहार करने का यह गुण व्यक्ति में समाजिकरण के माध्यम से ही संभव है. वर्तमान समय में जनसंचार ने हमारे जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित किया है, जिसमें समाजीकरण की भूमिका को भलीभांति देखा जा सकता है.जनसंचार माध्यम सामाजिक मानदंडों, दृष्टिकोणों और अपेक्षाओं को हमारे समक्ष प्रस्तुत कर इसे सुदृढ़ करते हुए इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं.मीडिया के विभिन्न रूपों के माध्यम ,व्यक्तियों को विभिन्न दृष्टिकोणों,सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व और सामाजिक मुद्दों से अवगत कराता है जो समाजीकरण में अपनी भूमिका निभाते हैं.घर से बाहर तक आज हम मोबाइल के रूप में जनसंचार के माध्यम को समेटे उससे कमोवेश प्रत्येक पल प्रभावित होते रहते हैं. इससे हमारे न सिर्फ सोचने का तरीका प्रभावित होता है बल्कि वह हमारे व्यवहार में भी सम्मलित हो जाते हैं जो समाजीकरण का ही हिस्सा हैं. नन्हें मुन्ने की परवारिश या उन्हें घर बाहर के माहौल से परिचित कराकर सामाजिक अंतरक्रिया के अनुकूल बनाने का कार्य जनसंचार ही करने लगा है.समाज में कौन से मूल्य को अपनाया जाए और किन मूल्यों को त्यागने की आवश्यकता है इसका पैमाना घर परिवार से ज्यादा जनसंचार तय करता है.इसलिए यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि हम सभी जनसंचार के प्रभाव से प्रभावित हों रहे हैं.इस प्रकार समाजीकरण की प्रक्रिया जनसंचार माध्यम की भूमिका महत्वपूर्ण बन जाती है.

मुख्य शब्द : परवरिश आदर्श मूल्य,अपेक्षा,प्रक्रिया,अंतरक्रिया ,तौर - तरीकों ,भूमिका,जनसंचार,मीडिया,योगदान,प्रभाव

समाजीकरण की प्रक्रिया में जनसंचार

जनसंचार हमारे जीवन का एक अहम हिस्सा बन चुका है.हमारे सुबह की शुरुआत से लेकर बिस्तर पर जाने से पहले हम जनसंचार के घेरे में होते हैं. हर व्यक्ति का मोबाइल की जरूरत और इस पर मीडिया के सभी स्रोतों की उपलब्धि ने व्यक्ति के जीवन को काफी प्रभावित करने का काम किया है . घरेलू व्यवहार और तौर - तरीकों के अतिरिक्त मोबाइल से अत्यधिक सानिध्यता रहने के कारण इसने हमारे जीवन के प्रत्येक कार्य में अपने हस्तक्षेप करना शुरू कर दिए हैं .हमारे सांस्कृतिक जीवन की मौलिकता से लेकर हमारे सोचने और व्यवहार करने के तरीके में भी इसने काफी परिवर्तन ला दिया है.हमारे नैतिकता के मानदंडों को जनसंचार ने काफी हद तक प्रभावित किया है. नैतिकता का जो पाठ हम अपने परिवार में कहानियों के माध्यम से सीखते थे उसे जनसंचार अपने तरीके से हमारे बीच रख रहा है. जनसंचार द्वारा बार - बार प्रस्तुत किए जानेवाले संदेश हमारे मन मस्तिष्क के सोच को परिवर्तन करने में सफल हो जाती है .माता पिता और बच्चो के संबंध में काफी बदलाव आया है,जिसका एक मुख्य कारक जनसंचार को माना जाना चाहिए.जनसंचार के जरिए सम्पूर्ण विश्व एक केंद्र पर सिमट गया है जिससे हमारे सोचने - समझने की प्रवृति काफी प्रभावित हुई है. एक - दो दशक पूर्व माता- पिता और बच्चों के बीच व्यवहार के जो तरीके थे उसे जनसंचार ने अपने प्रभाव

@2025 Bihar Shodh Samaagam

में ले आया है. माता - पिता और बच्चो के बीच के संबंध में पहले की अपेक्षा ज्यादा खुलापन आया है.जनसंचार के प्रभाव के कारण ही अभिभावक भी अपने व्यवहार को पहले की अपेक्षा बदलने को बाध्य हुए है. माता पिता द्वारा अपने बच्चों के प्रति निकट संबंध की जरूरत के प्रति सजगता और मित्रवत व्यवहार करने की प्रेरणा में जनसंचार के प्रभाव का ही योगदान है.

आधुनिक युग में बच्चों को स्मार्ट बनाने में जनसंचार का भरपूर योगदान है.पहले की तरह आज के बच्चे न किसी आगंतुक से शरमाते है न ही भयभीत होते हैं,इसका मुख्य वजह है जनसंचार द्वारा उनका समाजीकरण करना. कुछ विज्ञापन ऐसे प्रस्तुत किए जाते हैं जिसमे बच्चे की दिलेरी पर सारा परिवार झूमता नजर आता है.चुकी अब जनसंचार माध्यम हर एक घर का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है और बच्चे उन्ही के माहौल में बड़े होते है.जाहिर हैं बच्चों के जिंदादिली पर जनसंचार का प्रभाव आवश्य पड़ेगा. इसका एक कारण यह भी है कि जनसंचार के संदेश बहुत ही उत्तेजात्मक रूप से प्रस्तुत किए जाते हैं ताकि यह सबों के मन मस्तिष्क में पहुंच सके.जो निर्णय लेने की क्षमता का विकास हमें अपने परिवार के सदस्यों के माध्यम से होता था,आज इस काम में जनसंचार अपनी भूमिका निभा रहा है.इसलिए यह कहना गलत नही होगा कि जनसंचार सकारात्मक पहलुओं के साथ कुछ नकारात्मक समाजीकरण कर रहा है. बच्चो द्वारा चोरी,झूठ,बेईमानी जैसे व्यवहार भी जनसंचार के प्रभाव से प्रेरित है. इसलिए यह जरूरी है कि अभिभावक के मार्गदर्शन में जनसंचार का प्रयोग नौनिहालों के सकारात्मक समाजीकरण के लिए अति आवश्यक है.अगर बच्चे अपने बड़े के गैर मौजूदगी में जनसंचार माध्यम का समाजविरोधी कार्यों में उपयोग करते हैं तो इससे न सिर्फ उनका अहित होता है ,बल्कि समाज और देश के लिए बुरा है.

जनसंचार निम्न रूपों में व्यक्ति का समाजीकरण करता है

व्यक्तित्व के विकास में समाजीकरण: ऐसे तो परिवार किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है.जिस तरह का किसी व्यक्ति के घर का वातावरण रहेगा व्यक्ति के गुण और स्वभाव उसी परिवार के आदर्श मूल्यों को अपने में आत्मसात करेगा और अन्य लोगों से वैसी ही व्यवहार करेगा. क्योंकि उसकी सीमाएं उसके घर तक ही सीमित है. लेकिन जैसे- जैसे वह बच्चा अपने परिवार से अलग बाहरी लोगों के संपर्क में आएगा,उसके समाजीकरण की प्रक्रिया में बाहर के लोग भी प्रभाव पड़ता है.लेकिन आज व्यक्ति जन्म लेने के साथ ही जनसंचार के प्रभाव में आ जाता है.जनसंचार के दृश्य काफी आकर्षक और प्रभावकारी होते हैं जो किसी के मस्तिष्क में अपना प्रभाव स्थायी बनाने में सफल हो जाते हैं.जब एक ही संदेश और दृश्य से व्यक्ति का सामना बार बार हो तो उसके प्रभाव से अछूता रहना किसी व्यक्ति के लिए असंभव है .यही कारण है आज के बच्चे किसी की टीवी सीरियल से प्रभावित होने पर उस सीरियल के पात्र जैसा व्यवहार करने लगते हैं.इस तरह जनसंचार व्यक्ति के चरित्र निर्माण में भी अहम भूमिका निभाने का कार्य करने लगा है.

पर संस्कृति ग्रहण की संभावना - जनसंचार के बढ़ते प्रभाव ने हमारे समाज को काफी प्रभावित किया है.लज्जा- शर्म के कई गुण हमारे घर की स्त्रियों में ही नहीं बल्कि बहुत- से मामले में पुरूषों में भी पाई जाती थी.लेकिन जनसंचार का हर व्यक्ति तक पहुंच ने व्यक्तियों के सोच को काफी प्रभावित किया है. ना चाहते हुए भी हमारी संस्कृति में बाहरी संस्कृति के तत्व समाहित होने लगे हैं. क्योंकि जनसंचार अपनी बात को दैनिक रूटीन की तरह हमारे सामने पूर्णावृति करती है,जो हमारी सोच पर हावी होने में सफल हो जाता है.इस तरह हम अपने मौलिक संस्कृति की जगह पर उनको स्थान देने लग जाते हैं.उदाहरण के लिए अपने बड़ों के सामने अपनी विवाह की बात रखना,परिवार नियोजन जैसी बातों पर बेझिझक बात करना आदि.यह सब बातें कुछ समय पहले तक अपने हम उम्र के लोगों के बीच कहने में भी पर्दा का ख्याल रखा जाता था.पर अब वैसी बात नहीं रही. आजकल के बच्चे ना सिर्फ बेडिंग प्लानिंग करते हैं बल्कि विवाह के बाद कितने साल बाद उन्हें कब माता पिता बनना है अपने अभिभावक के सामने स्पष्ट रखते हैं.अब तो विवाह में वरमाला के समय दुल्हन स्टेज पर दूल्हे के सामने नृत्य करते हुए आती है,जो हमारी संस्कृति का हिस्सा कभी रहा ही नहीं है. पूरे बरात के सामने विवाह से पूर्व लड़की द्वारा स्टेज पर नृत्य करना,दुल्हन का शर्माना हमारे रिवाज को पूरी तरह खो रहा है.

परिवारिक संबंधो में परिवर्तन - जनसंचार माध्यम ने परिवारिक संबंधो को सामान बना दिया है.हमारी संस्कृति में माता - पिता,दादा- दादी,चाचा - चाची सभी का एक क्रमबद्ध स्थान था.जिनके निर्णय के आभाव में बड़े - बड़े काम रुक जाते थे.घर के श्रेष्ठ जनों का निर्णय के आधार पर ही कोई काम सफल हो पाता था.पर अब संबंधों के ऊंच - नीच का संस्तरण लगभग समाप्त होता जा रहा है.सभी लोग को सामान दृष्टिकोण से देखे जाने के कारण परिवार के किसी सदस्य का व्यक्तिगत निर्णय को अहम समझा जाता है.घर के बड़े बुजुर्ग को कई फैसले पर असहमति होते हुए भी चुप रहना पड़ता है .जनसंचार के माध्यम ने हमारे परिवारिक संबंधो में व्यक्तिगत तुष्टि को महत्वपूर्ण बना बड़े बुजुर्ग की गरिमा में कमी लाने का काम किया है. "हम" के स्थान में "मैं" महत्वपूर्ण हो गया है.यही कारण है की किसी भी निर्णय में सबसे पहले किसी व्यक्ति के लाभ - हानि को ध्यान में रखने के बाद ही परिवार के अन्य लोगों पर होने वाले प्रभाव पर गौर किया जाता है.उदाहरण के लिए वैवाहिक संबंध की स्थिरता के लिए लड़का लड़की के पसंद को प्राथमिकता देने के बाद ही परिवार के अन्य लोगों की पसंद को पूछा जाता है और रिश्ते किए जाते हैं.

परिधान में खुलापन - जनसंचार माध्यम के विस्तार से पहले प्रत्येक संस्कृति की अपनी - अलग वेश - भूषा थी ,जिनके आधार पर हमें यह समझते देर नहीं लगती थी, वह व्यक्ति उत्तर या दक्षिण राज्य का है. पंजाबी,राजस्थानी या बंगाली लोग अपने वेश भूषा से ही पहचान लिए जाते थे.लेकिन जनसंचार ने लगभग इस अंतर को पाटने का काम किया है.ऑनलाइन सेवाओं ने तो इसमें अपनी पैठ जमाने में कोई कमी नहीं की है.अब तो वेस्टर्न कपड़े की मानसिकता जन - जन पर इतनी हावी हो रही है कि यह कहना मुश्किल है कि विवाह और पूजा के मौके पर पहने जाने वाले धोती और साड़ी का रिवाज का अस्तित्व रह पाएगा या नहीं. वेस्टर्न पहनावे का बढ़ता प्रचलन ने भारत के बाजारों में भारतीय पहनावे को लुप्त करता प्रतीत होता है. जहां - कहीं भारतीय संस्कृति थोड़ी - बहुत देखने को मिल भी रही है,वहां के लोग भी बाहर के माहौल में इन परिधानों को अपनाने में पलभर भी बिलंब नहीं करते. हॉट पैंट,शॉर्ट इत्यादि पहनावे और माताओं द्वारा लॉन्ग फ्रॉक शहरों में खूब देखे जा सकते हैं.

सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव - जनसंचार का समाजीकरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका यह है कि यह सामाजिक दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाया है.आजकल रेडियों,टीवी, मोबाइल,सोशल नेटवर्किंग और यातायात के बढ़ते साधन ने लोग की पहुंच देश के हर कोने तक कर दी है.गूगल मैप की सहायता से लोग आसानी से कहीं भी जा सकते है. गूगल के महत्व के बढ़ते प्रभाव से सभी लोग भली - भांति एक दूसरे के जीवन शैली और आचार - व्यवहार से परिचित हो रहे हैं .इसीलिए समाज में फैली बहुत - सी सामाजिक भ्रांतियों का खुलासा हो रहा है.भिन्न - भिन्न लोगों के विचारों से परिचित होने के कारण लोगों के सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन आ रहा है. लोग ऐसी पुरानी विचारधारा जो अंधविश्वासों से जुड़ी हुई हो,उसे त्याग रहे है.विशेष कर नई पीढ़ी में यह परिवर्तन स्पष्ट देखने को मिल रही है. वो तर्क पूर्ण बातों पर अमल कर रहे हैं. इससे अंतर्जातीय विवाह भी बड़े पैमाने पर होने लगा है. आज के युवा पीढ़ी अध्ययन या कार्य करने के दौरान अपने समान विचारधारा के साथी ढूंढकर गृहस्थ जीवन बिताने के लिए अपने अभिभावक का सहमति ले रहे हैं. पहले की अपेक्षा आज के अभिभावक भी अपने बच्चों के खुशी में अपनी खुशी ढूढने के लिए तैयार हो रहे हैं,इसके पीछे जनसंचार की तैयार की हुई पृष्ठभूमि को अनदेखा नहीं किया जा सकता.दिन - रात मीडिया से घिरे रहने के कारण और उसमें प्रसारित संदेशों ने अभिभावक के मन को अपने अनुकूल करने को बाध्य किया है. बेटियां आज घर से दूर रहने लगी है ,इसके पीछे जनसंचार का काफी हाथ है.पहले बहुत अमीर घराने की बेटियां ही बाहर रहकर पढ़ती थी.लेकिन जनसंचार और सरकार का बेटियों के लिए प्रोत्साहन योजना ने आर्थिक रूप से कमजोर मां - बाप को भी बेटियों को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया है.अब गरीब घर की बेटी की भी पहली मंजिल, जीवन में आगे बढ़ना तब विवाह करने की है.

बेटियों के प्रति बदलता दृष्टिकोण - जनसंचार माध्यम ने बेटियों के प्रति अपने दृष्टिकोण को बदला है.बचपन से ही बेटियों को परिवार में भेद भाव से पाला जाता था. उनके खान - पान ,वेश भूषा और घर बाहर जाने की आजादी में लड़कों के मुकाबले अत्यधिक रोक टोक थी. लेकिन शिक्षा के बढ़ते प्रभाव और जनसंचार माध्यम द्वारा बेटा - बेटी के फर्क को दूर कर समानता की

बात से लोगों की सोच में बदलाव आया है. लड़कियां लड़कों से कम नहीं जैसे संदेश ने लोगों की सोच बदलने का काम किया है. समय और चुनौतियों को लड़कियों ने मौका मिलने पर साबित कर दिखाया है,जिसने कई लडकियों के आगे बढ़ने को प्रोत्साहित किया है.केंद्र सरकार और राज्य सरकार की बालिकाओं के लिए योजना ने ऐसे सोच को और बढ़ावा दिया है.अब लड़कियां पढ़ने में दिलचस्पी ले रही है बल्कि अपने पैरो पर खड़ा होने को तैयार रहती है. लड़कियों का जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ने की गति ने लोगों का बेटियों के प्रति दृष्टिकोण बदला है.घर के वारिश के रूप में पहले लड़के को इंपोर्टेंट दी जाती थी.लेकिन अब सोच बदली है. छोटा परिवार सुखी परिवार के नारा ने लोगों को इसका महत्व भी समझा दिया है.अब लोग छोटा परिवार रखने के लिए लड़का या लड़की हो परिवार नियोजित कर लेती हैं. ऐसे कई उदाहरण समाज में देखने को मिलते हैं जिन्होंने सिर्फ 2 लड़कियां होने पर परिवार नियोजित कर लिया है.ऐसे परिवार लोगों को लड़कियों के प्रति भेद रहित सोच बदलने में अहम भूमिका निभाते हैं .जिन माता पिता के सिर्फ लड़कियां होती है उनकी बेटियां ही उनके मृत्यु उपरांत मुखाग्नि देने का काम कर रही है.अब लोगों को ऐसी बातों में बुरा भी नहीं लगता ,जैसा कि पहले धारणा थी कि मृत्यु के बाद मुखाग्नि पुरुष द्वारा ही di jani चाहिए.

स्वास्थ्य जीवन शैली से परिचय - जनसंचार माध्यम ने व्यक्ति के स्वास्थ्य संबंधी जानकारी से परिचय कराकर उसे बहुत से असाध्य रोगों से परिचय कराने में अपनी भूमिका निभाई है.जिससे लोग न सिर्फ स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हुए है बल्कि अपनी यह शिक्षा पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित भी कर रहे . टीवी ,मोबाइल,अखबार इत्यादि में स्वास्थ्य संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियां मोटे मोटे अक्षर में देखने को मिलते हैं.इसलिए यह लोगों का ध्यानाकर्षण करने में माहिर होते है. जीवन में ऐसी बहुत - सी समस्याएं जिनका समाधान असंभव लगता था ,जनसंचार के माध्यम से लोगों का ज्ञानवर्धन हो रहा है. निसंतान दंपती अक्सर समाज में तानों का शिकार होते थे,जिनसे उनका जीवन नरकीय हो जाता था.पर जनसंचार ने ऐसे दंपती में आशा के नई किरण दिखाकर , लोगों के धारणा को बदलने का काम किया है.माता पिता बनने और लड़का या लड़की के लिए उत्तरदाई गुणसूत्र की जानकारी से लोगों के मुंह पर ताले लगे हैं. बेटे के जन्म नहीं होने पर प्राय: महिलाएं ही दोषी करार दी जाती थी. पर अब सब जान चुके हैं कि लड़का या लड़की के जन्म के लिए उत्तरदाई क्रोमोसोम एक्स और वाई है.

रुचि के अनुकूल कार्यक्षेत्र - आज सम्पूर्ण विश्व एक केंद्र में सिमट गया है. इसीलिए दुनिया भर के लोगों के आचार - विचार से परिचय हो रहा है.वैश्वीकरण के कारण हम लोगों के भिन्न - भिन्न संस्कृति से भी काफी परिचित हो रहे हैं.किसी समाज में किसी चीज को अच्छा समझा जाता है तो दूसरे समाज में बुरा. जो चीज हमारे गांव के लोग पसंद नहीं करते उसे शहर में अच्छा समझा जाता है. कहने का अभिप्राय यह है कि इस संसार में सभी चीजों का जगह विशेष के अनुसार मोल है.इसीलिए जनसंचार ऐसे लोगों की रूचियां जिन्हे स्थानीय लोग उतना महत्व न दे लेकिन उसे प्रदेश के लोग काफी महत्व दे.ऐसे लोगों के भविष्य संवारने में जनसंचार काफी योगदान दे रहा है. लोग जब ऐसे लोगो के काम को सराहते है तो उन्हें भी अपनी रुचि के अनुरूप काम करने में मजा आता है,साथ ही जीवन यापन का साधन भी बनता है.आजकल रील्स के मध्यम से कई ऐसे कलाकार सामने आ रहे हैं,जिन्हे घर में दो वक्त की रोटी की समस्या थी मगर रिल्स के जरिए वो काफी वायरल हो गए.उनके दो जून की रोटी की समस्या भी हल हो गई.जनता उनके हुनर को पसंद कर रही है और उनसे आगे भी वैसे रील बनाने की मांग कर रही है.जनसंचार के माध्यम से महिलाएं घर बैठे अपनी सिलाई,कढ़ाई का प्रदर्शन कर रोजगार बढ़ा रही है. इस तरह जनसंचार हर तरह के रुचि के लोग को उनकी अपनी रुचि को प्रदर्शित करने का मौका दे रही है.अब यह कहने की बात नहीं रही अमुक विशेष काम करके ही जीवन यापन किया जा सकता है. जनसंचार ने सभी व्यक्ति के दिमाग को इतना खोल दिया है कि मार्ग बहुत है अगर मंजिल तक जाना है . कोई समस्या एक व्यक्ति की न होकर बहुत से लोगों की होती है ,जिसका समाधान जनसंचार माध्यम के पास है.

नकारात्मक प्रभाव - जनसंचार के बढ़ते प्रभाव से कोई व्यक्ति अछूता नहीं है.जनसंचार का बढ़ता प्रभाव और सस्ती पब्लिसिटी के सहज तरीके ने अज्ञानता और समझदारी के आभाव में इसके कई नकारात्मक असर लोगों के मस्तिष्क पर डाल रहा है .सोशल मीडिया पर अश्लील रील्स की भरमार और इसे रोक टोक के नियंत्रण से बाहर रखना न सिर्फ युवाओं को बल्कि अवयस्क बच्चे

पर भी बुरी छाप छोड़ रहा है.पैसा कमाने की होड़ में कोई भी व्यक्ति किसी तरह का रील और वीडियो बनाकर वायरल होना चाहता है.यह जितना सहज है उतना ही हमारे समाज के घातक भी.अज्ञानता के कारण भले ही ऐसे दृश्यों को देखनेवाले की संख्या में वृद्धि हो सकती है.लेकिन कभी - कभी ऐसे वीडियो गलती से क्लिक हो जाने पर समझदार व्यक्ति को भी लज्जा अनुभव करा देती है.जनसंचार के माध्यम में हमारे जीवन में सबसे ज्यादा हावी सोशल मीडिया हो गया है.यह कहना गलत नहीं होगा कि इसमें अच्छी चीजों के साथ- साथ नकारात्मक संदेश भी होते हैं जिसे एक समझदार और परिपक्व व्यक्ति ही भेद कर सकता है.समाज विरोधी बातें,सांप्रदायिक बातों की उपेक्षा या अनदेखी करने का कौशल प्रत्येक व्यक्ति को हो यह जरूरी नहीं सोशल मीडिया पर बहुत सी ऐसी चीज की भरमार है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व को गलत दिशा की ओर ले जा सकते हैं.खासकर यौनोत्तेजना को बढ़ावा देने वाले वीडियो किशोरों को सही मार्गदर्शन के अभाव में भटकाव की ओर ले जा रही है. उनका ध्यान पढ़ाई से भटक कर इस मानसिकता में अपना भविष्य तलाशती है. जो न सिर्फ उनके वर्तमान जीवन से भटकाव करती है बल्कि भविष्य को भी खराब करने के लिए तैयारी कर देती है. किशोरों द्वारा किए जाने वाले अपराध,हत्या,बलात्कार,चोरी,छीना झपटी के मामले का कुछ नकारात्मक योगदान जनसंचार का ही है..इसलिए यह भी कहा जा सकता जनसंचार से गैर समाजीकरण करने के लिए अंशत: जिम्मेवार है.

निष्कर्ष

उपरोक्त विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि समाजीकरण की प्रक्रिया में जनसंचार माध्यमों का अहम योगदान होता है.जनसंचार माध्यमों के जरिए लोग आस - पास के अलावा दूर दराज की दुनिया के बारे में जानकारी हासिल करते हैं.इससे उन्हें सामाजिक मानदंडों और मूल्यों को समझने में मदद मिलती है. जनसंचार के माध्यम से लोग अपने को समाज में व्यवहार करने और जीने के अनुकूल बनाते हैं.जनसंचार के जरिए लोग जातिवाद ,लिंग - भेद जैसी मानसिकता से दूर हो रहे हैं और उनमें सामाजिक बुराईयों को दूर करने का दृष्टिकोण बन रहा है.जनसंचार न सिर्फ लोगों के सोच को प्रभावित कर रही है,बल्कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए एक रणनीति तैयार कर रही है. इसने समाजीकरण के दायरे को बढ़ा कर लोगों के लिए कई विकल्प खोल दिए हैं.व्यक्ति के आत्मनिर्भर होने के लिए तरह - तरह के रास्ते की पहचान इसके माध्यम से होने लगी है.समाजीकरण के दायरा एक ग्लोबलाइजेशन स्तर पर होने के कारण व्यक्ति अब सिर्फ परिवार पर निर्भर नहीं रहा.व्यक्ति के किसी अभिरुचि को अगर परिवार द्वारा मान्यता नहीं मिली तो उसे दूसरे जगह महत्व दी जाएगी.इस प्रकार जनसंचार सभी व्यक्तियों के व्यक्तिगत गुण को पोषित करने का काम करने लगा है.यही कारण है कि अब प्रतिभाएं छुप नहीं सकती.जनसंचार माध्यम ने लोगों के सोच को सकारात्मक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिसके कारण न सिर्फ शारीरिक और मानसिक रूप से सक्षम व्यक्ति बल्कि विशेष आवश्यकता वाले व्यक्ति ने भी अपनी प्रतिभा का परचम लहराकर विश्व कीर्तिमान स्थापित किए हैं.शिक्षा के बढ़ते स्तर,स्वास्थ्य जागरूकता,डायट सतर्कता,रोजगार के प्रति जागरूकता से लेकर पर्सनेलिटी डेवलपमेंट और परिधान जैसे विषय वस्तु का फैलना फूलना जनसंचार के जरिए ही संभव हुआ है. मूल रूप से यह कहना प्रासंगिक होगा कि जनसंचार माध्यम ने समाजीकरण प्रक्रिया में व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक अपनी भूमिका निभाने के लिए तत्पर है.

संदर्भ सूची :–

1. जेना मनोज कुमार (2014) इंफोरमेसन सोसाइटी एण्ड चेंजिग फेमिली रिलेसनशीप ए केस स्टडी ऑफ बंगलोर, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
2. महाजन एस (2006) ग्लोबलाइजेशन एण्ड सोशल चेंज न्यू दिल्ली लोटस प्रेस
3. गुप्ता एण्ड श्रीवास्तव (2008,) इनफॉर्मेशन टेक्नॉलॉजी एण्ड इट्स एप्लीकेशन इन बिजनेस, साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा
4. जेना मनोज कुमार (2014) इंफोरमेसन सोसाइटी एण्ड चेंजिग फेमिली रिलेसनशीप ए केस स्टडी ऑफ बंगलोर, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
5. प्रो. राम लखन मीणा (2020) सामाजिक मीडिया विमर्श सिद्वांत और अनुप्रयोग, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थलाय, जयपुर
6. कविता भाटिया (2025) सोशल मीडिया वर्चुअल से वास्तविक, सेतु प्रकाशन
7. डॉ. संगीता रानी (2023) सोशल मीडिया संभावना और चुनौजियां, नटराज प्रकाशक, दिल्ली
8. असवर्दो.दम (2017) इफेक्ट्स ऑफ सोशल मीडिया ऑन हयुमन बिहेवीयर
9. एडोल्फ इलीगार्ड जेन्सन (1951) मिथ कल्ट अमंग प्रीमिटिव पीपुल्स, कोल्समैन पब्लिकेशन, जर्मनी।
10. कुमार डॉ बीरेन्द्र, इम्पैक्ट ऑफ मीडिया इन गुड गवर्नेंस, मीडिया एण्ड सोसाइटी इशूज